राजस्थान की मिट्टी और संस्कृति को समर्पित मासिक पत्रिका

राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 1 | मार्च - 2025 | पृष्ठ संख्या 30
www.rajtaj.com

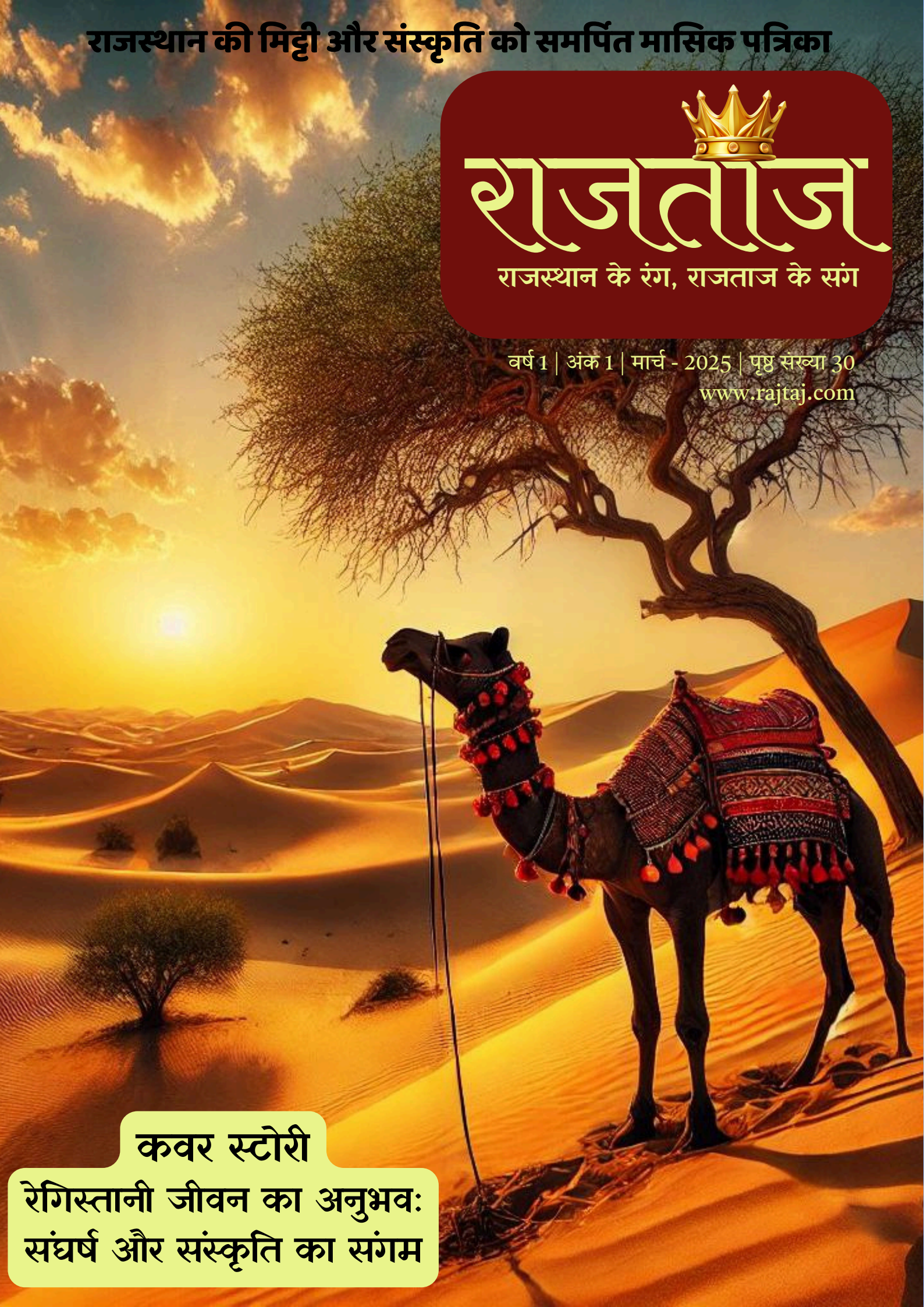

कवर स्टोरी

रेगिस्तानी जीवन का अनुभव: संघर्ष और संस्कृति का संगम

www.rajtaj.com

राजताज

राजस्थान के रंग, राजताज के संग

वर्ष 1 | अंक 1 | मार्च - 2025 | पृष्ठ संख्या 30

मूल्य - आपकी मुस्कान

राजस्थान की मिटटी, संस्कृति एवं रोजमर्रा की ख़ूबसूरती को शब्दों में पिरोती साहित्यिक पत्रिका "राजताज" राजस्थान के उर्जावान शिक्षकों की अभिनव पहल है.

संपादक मंडल

मुख्य संपादक

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

सह-संपादक

गिरधर राम
(कर्मठ अध्येता और लेखक)
बीकानेर, राजस्थान

संपादकीय सहयोगी

गोविन्द सुवालका
(अध्यापक)
भीलवाडा, राजस्थान

देवीलाल जांगिड
(अध्यापक)
जैसलमेर, राजस्थान

पोकरा राम
(अध्यापक)
बालोतरा, राजस्थान

प्रकाशन स्थल

"राजताज" शोभाला जेतमाल, चोहटन,
जिला-बाड़मेर, राजस्थान - 344702

हमसे संपर्क करें

Email- admin@rajtaj.com
Whatsapp- +919001363510

क्या आप "राजताज" नियमित प्राप्त करना चाहते है?

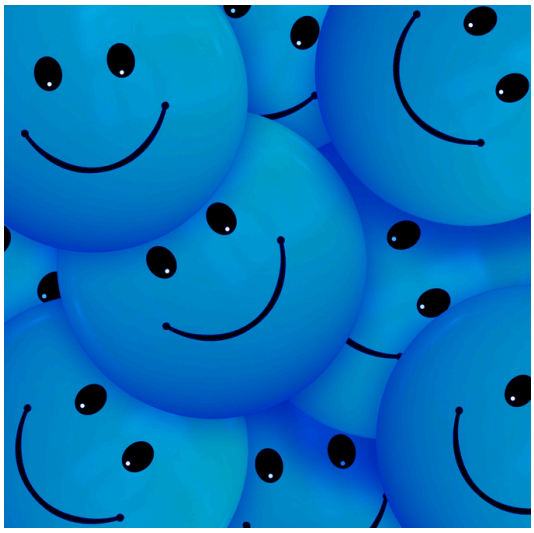

मूल्य: आपकी मुस्कान

सामने दिए गए सोशल मीडिया आइकन पर क्लिक करके आप हमसे जुड़ सकते है और नियमित पत्रिका घर बैठे अपने मोबाईल पर पा सकते है.

Whatsapp के आइकन पर क्लिक करने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जायेगा और नियमित पत्रिका भेजने के लिए आपका नंबर पंजीकृत हो जायेगा.

राजताज के टेलीग्राम चैनल से जुड़कर आप नियमित पत्रिका प्राप्त कर सकते है.

सामने दिए गए आइकन पर क्लिक करें और राजताज की वेबसाइट www.rajtaj.com पर विजिट करें.

ईमेल पर हमसे संपर्क करने के लिए सामने दिये गए आइकन पर क्लिक करें या admin@rajtaj.com पर मेल करें.

इस अंक में

सम्पादकीय	• सम्पादक की कलम से		5
कवर स्टोरी	• रेगिस्तानी जीवन का अनुभव: संघर्ष और संस्कृति का संगम	चूना राम चौधरी	7
प्रेरणा के मोती	• ऐनी फ्रैंक		11
गौरवशाली इतिहास	• कटार का धणी: अमरसिंह राठौड़	गिरधर राम	12
कविता	• हमें गर्व है इस मरुधरा पर	चूना राम चौधरी	15
पधारो म्हारे देश	• जयपुर की सैर: राजसी वैभव और रंगीन संस्कृति का अनोखा संगम	ठाकराराम जाखड़	16
सपनें,संघर्ष, सफलता	• पिताजी हमेशा कहते है बेटियां बेटों से कम है क्या - पायलट गरिमा चौधरी	पोकरा राम	20
चित्र पहेली	• प्रतियोगिता		24
कविता	• त्यौहार होली को आयो रे	गोविन्द सुवालका	25
लोक रंग	• अलगोजा: राजस्थान की रेत में बसी सुरों की सरगम	बाबूलाल गोदारा	26

राजताज पत्रिका में संग्रहित सम्पूर्ण सामग्री लेखकों की रचनात्मक प्रतिभा का परिणाम है. जिनमें उनके निजी विचार व्यक्त हुए है. हम उनकी विचार स्वतंत्रता का सम्मान करते है. उसमे संपादक मंडल की सहमती आवश्यक नहीं.

For more update visit our website:

www.rajtaj.com

राजताज की वेबसाइट पर जाने के लिए यहाँ क्लिक करें.

संपादकीय

राजस्थान की धरती और संस्कृति को समर्पित मासिक पत्रिका राजताज का यह अंक आपके हाथों में सौपते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है. स्वागत है आपका "राजताज" पर, जहां राजस्थान की संस्कृति, परंपराएं और रोज़मर्रा की खूबसूरती को शब्दों और तस्वीरों में पिरोया जायेगा. यह पत्रिका हमारी मिट्टी, हमारे संस्कार और हमारे जीवन के हर रंग को दुनिया के सामने पेश करने का एक छोटा सा प्रयास है.

हमारे राज्य का नाम लेते ही यहाँ के रेतीले धोरे, ऊंट की सवारी, किले और हवेलियाँ, सुन्दर महल, वीरों और वीरांगनाओं की जीवंत कहानियाँ, चम्बल और लूनी जैसी नदियाँ, घूमर और कालबेलिया नृत्य और रंग बिरंगे पारंपरिक परिधान हमारी आँखों के आगे तैरने लगते है. क्या यहाँ बताई गई बातों में सिमट गया है राजस्थान, जी नहीं, इससे कही अधिक है, इससे कही विस्तृत है हमारा राजस्थान. राजताज राजस्थान की विशेषताओं को समेटे हुए है. इन सबके साथ दिल को छू लेने वाली कविताओं, जीवन को नई रह दिखाने वाले संस्मरणों, प्रेरणा और उम्मीद देती कहानियों, नवीन ज्ञान का सृजन करने वाले लेखों जैसे कई मोतियों को पिरोकर "राजताज" रूपी माला तैयार की गई है. हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि "राजताज" में सम्मिलित प्रत्येक रचना हर एक पाठक के अन्दर सकारात्मक बदलाव को उद्वेलित करेगी.

आइए, इस सफर में हमारे साथ जुड़े और राजस्थान की महकती हुई हवाओं को महसूस करें. क्योंकि यह सिर्फ एक भूमि नहीं, बल्कि एक जज़्बा है, एक अहसास है.
"राजताज.कॉम" सिर्फ एक मैगजीन नहीं, बल्कि एक पुल है जो पुरानी और नई पीढ़ी को जोड़ता है. यहां की हर बात, हर तस्वीर, और हर शब्द आपको अपनी मिट्टी के करीब लाने का काम करेगा.

"राजताज" का पहला अंक आपके हाथों में है. पढ़ें और अपनी प्रतिक्रियाएं हम तक पहुंचाएं. आपका का हर संदेश "राजताज" को और अधिक निखारने में सहायक होगा।

-सम्पादकीय टीम

राजताज की आवश्यकता क्यों

चंद सेकण्ड वाली रील्स और शोर्ट वीडियो वाली दुनिया में एक बार मन हुआ कि क्यों न रुक कर पता किया जाये कि हम कर क्या रहें है. सुबह की चाय के साथ शुरुआत के बाद दिन में बच्चों की पाठ्यपुस्तकें और रात्रि से पूर्व किसी वेब सीरिज या मूवी के साथ समय व्यतीत करना अथवा बचपन से कुछ पढ़ाकू आदत होने के कारण किसी मनपसंद साहित्य का अध्ययन. ऐसा लग रहा था मानो कल्पना शक्ति, रचनात्मकता और मौलिकता तो अंतिम सांसे गिन रही हो. इसी मौलिकता को बचाने के उद्देश्य से शुरुआत हुई “राजताज" की. हम सौभाग्याशाली है कि शैक्षिक साहित्य में रूचि दिखाने वाले अनेक शिक्षाविद साथी “राजताज” के साथ आये और इसे स्थापित करने में अपना प्यार और सहयोग दिया.

राजताज अब ई-पत्रिका के रूप में आपके सामने प्रस्तुत है. निश्चित ही कुछ माह बाद आप इसे मुद्रित पत्रिका के रूप में भी पाएंगे. आपके प्यार की, साथ की, आत्मीयता की और सलाह की आशा सजाये हुए “राजताज” का प्रथमांक आपको समर्पित है.

-संपादक की कलम से

पाठक-प्रतिकिया

आपकी राय, हमारी ताकत!

प्रिय पाठकों,आपकी सहभागिता और सुझाव हमारी ई-मैगज़ीन को और बेहतर बनाने की प्रेरणा देते हैं. हम आपके विचारों, समीक्षाओं और सुझावों का स्वागत करते हैं. आपका हर एक शब्द हमें न केवल प्रोत्साहित करेगा, बल्कि हमारी सामग्री को और समृद्ध बनाएगा.

“पाठक प्रतिक्रिया” स्तंभ में आप अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, हमारे लेखों पर अपनी राय दे सकते हैं, और उन विषयों का सुझाव दे सकते हैं जिन्हें आप पढ़ना चाहते हैं. तो देर किस बात की? सामने दिए गए whatsapp के आइकन पर क्लिक करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ हमें भेजें और इस यात्रा का एक अहम हिस्सा बनें!

कवर स्टोरी

रेगिस्तानी जीवन का अनुभव: संघर्ष और संस्कृति का संगम

--लेख--

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

रेगिस्तान का नाम सुनते ही ज़हन में तपती धूप, बेशुमार रेत के टीलों और ख़ामोश धरती का मंज़र उभरता है। लेकिन राजस्थान के थार रेगिस्तान का तजुर्बा इन आम धारणाओं से कहीं ज़्यादा दिलचस्प और अद्वितीय है। यह इलाक़ा सिर्फ़ मुश्किलात का मर्कज़ नहीं है, बल्कि इंसानी जज़्बे, रंगीन संस्कृति और प्रकृति के अद्भुत संतुलन की मिसाल है। थार में ज़िंदगी हर दिन एक नई चुनौती पेश करती है, लेकिन यहाँ के लोग इसे जिंदादिली और हुनर के साथ जीना बख़ूबी जानते हैं।

रेत के टीलों के बीच ज़िंदगी का संघर्ष

थार में ज़िंदगी प्रकृति की मुश्किल हालात के साथ मुक़ाबले की एक दास्तान है। यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियां, जैसे तपिश भरी गर्मी, कम बारिश और पानी की कमी, इंसानी हिम्मत की आज़माइश करती है। पानी यहाँ बेशकीमती है, और हर क़तरा यहाँ के लोगों के लिए ग़नीमत है। बावड़ियाँ, टांके और कुंए पानी जमा करने के लिए पारंपरिक तरीक़े हैं, जो सदियों से रेगिस्तान में इस्तेमाल किए जा रहे हैं।

इन मुश्किल हालात में भी यहाँ के लोग सादगी और मेहनत से अपनी ज़िंदगी को न सिर्फ़ आगे बढ़ाते हैं, बल्कि इसे रंगीन और जिंदादिल बनाते हैं। पानी की कमी और कठोर मौसम के बावजूद, यहाँ के लोग अपने मिज़ाज और तहज़ीब को बरक़रार रखते हैं।

थार की संस्कृति: रंग और संगीत का उत्सव

थार का जीवन अपनी सांस्कृतिक विविधता और उत्सवधर्मिता के लिए मशहूर है। कालबेलिया और घूमर जैसे लोकसंगीत यहाँ के सांस्कृतिक इज़हार के तरीके हैं। ये न सिर्फ़ मनोरंजन का ज़रिया हैं, बल्कि इनसे यहाँ की कहानी और विरासत बयां होती है। सारंगी, कमायचा और ढोलक की धुनें रेगिस्तान के टीलों पर गूँजती हुई मालूम होती हैं, जो यहाँ के सादगी भरे जीवन को एक अलग रंग देती हैं।

यहाँ के उत्सव भी रेगिस्तानी ज़िंदगी का अहम हिस्सा हैं। जैसलमेर का "मरु महोत्सव" और बीकानेर का "ऊँट उत्सव" पूरे हिंदुस्तान और दुनिया भर के सैलानियों को अपनी तरफ़ खींचते हैं। इन तीज़-त्यौहारों में ऊँट दौड़, कठपुतली शो और पारंपरिक खेलों का मंज़र दिलचस्प होता है। ये त्यौहार इस बात का सुबूत हैं कि थार की ज़िंदगी सिर्फ़ जद्दोजहद नहीं, बल्कि जश्न और खुशी का भी प्रतीक है।

थार का खाना: स्वाद और सादगी का संगम

थार के खानपान से यहाँ की ज़िंदगी की असलियत झलकती है। यहाँ का हर निवाला सादगी और सूझबूझ का नमूना है। दाल-बाटी-चूरमा, केर-सांगरी, गट्टे की सब्ज़ी और बाजरे की रोटी जैसे पकवान यहाँ की मिट्टी से गहरे जुड़े हुए हैं। इन व्यंजनों में कम पानी और आसानी से मिलने वाली चीज़ों का इस्तेमाल होता है, जो रेगिस्तानी हालत में क़ाबिले-तारीफ हैं। रेगिस्तान के चूल्हे पर बनी ताज़ी रोटियाँ और मिट्टी के बर्तनों में पका खाना सिर्फ़ स्वाद नहीं देता, बल्कि यहाँ की मेहनत और विशेष तौर-तरीकों का हिस्सा है।

रेगिस्तान के गाँव: सादगी और मोहब्बत की तस्वीर

थार के गाँव इंसानी ज़िंदगी की सादगी और मोहब्बत के जीते-जागते मन्ज़र हैं। मिट्टी और गोबर से बने घर, जो गर्मियों में ठंडक और सर्दियों में गर्मी देते हैं, यहाँ के लोगों के सूझबूझ और ज्ञान को दर्शाते हैं। गाँव की औरतें, जो चमकदार लहंगा-चोली पहनती हैं, और मर्द, जो रंगीन पगड़ियाँ बांधते हैं, थार की सांस्कृतिक पहचान को ज़िंदा रखते हैं।

गाँव के लोग आत्मीयता और मेहमान-नवाज़ी के लिए मशहूर हैं। यहाँ आप जैसे ही किसी गाँव में दाखिल होते हैं, ऐसा महसूस होता है जैसे आप किसी अपने के घर आ गए हों। उनकी मोहब्बत और सादगी दिल को छू लेती है।

रेगिस्तान की रात: सितारों भरा आसमान और सुकून

रेगिस्तान की रातें किसी ख्वाब से कम नहीं होतीं। दिन की तपिश के बाद ठंडी हवा और सितारों से भरा आसमान हर किसी को अपनी तरफ़ खींचता है। यहाँ खुले आसमान के नीचे कैम्पिंग करना और लोक गीतों के साथ वक़्त बिताना ज़िंदगी का सबसे हसीन तजुर्बा बन जाता है। यह तजुर्बा न सिर्फ़ दिल को सुकून देता है, बल्कि फितरत के साथ गहराई से जुड़ने का एहसास कराता है।

ऊँट सफ़ारी: रेत में रोमांच का एहसास

थार में घूमने का असली मज़ा ऊँट की सफ़ारी में है। ऊँट को यहाँ "मरुस्थल का जहाज़" कहा जाता है। रेत के टीलों पर ऊँट की सवारी करते हुए सूर्यास्त का दीदार एक ऐसा मंज़र है, जिसे अल्फ़ाज़ों में बयां करना मुश्किल है। जैसलमेर के सम और खुरी के रेत के टीले इस तजुर्बे के लिए मशहूर हैं।

थार का रेगिस्तानी जीवन सिर्फ़ जद्दोजहद की कहानी नहीं, बल्कि इंसानी हौसले, तहज़ीब और जश्न का बेमिसाल मिसाल है। यह इलाक़ा सिखाता है कि मुश्किलात में भी ज़िंदगी को हसीन और मक़सद भरा बनाया जा सकता है। थार की सैर एक ऐसा तजुर्बा है, जो न सिर्फ़ सैलानियों को लुभाता है, बल्कि ज़िंदगी और फितरत की गहराई को समझने का बेहतरीन मौका देता है।

प्रेरणा के मोती

एनी फ्रैंक

यह सोच कितनी अद्भुत है कि हमारे जीवन के सबसे अच्छे दिन तो अभी आने बाकी है.

एनी फ्रैंक (1929-1945) एक यहूदी किशोरी थी, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाज़ी शासन से छिपते हुए अपनी डायरी लिखी। उनकी डायरी, "द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल" (एक युवा लड़की की डायरी), युद्ध के बाद उनके पिता ओटो फ्रैंक द्वारा प्रकाशित की गई और यह विश्वभर में प्रसिद्ध हुई। मात्र 15 वर्ष की उम्र में, टाइफस महामारी के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

"इंसान की महानता उसकी दौलत और सत्ता पर निर्भर नहीं करती, ये तो निर्भर करती है उसके चरित्र और अच्छाई पर."

जीवित इंसान को इतने फूल नहीं दिए जाते जितने मौत के बाद चढ़ाये जाते है. क्योंकि आभार के मुकाबले हम खेद ज्यादा मजबूती से व्यक्त करते है.

"अपने आस पास अभी भी बची हुई सारी सुन्दरता के बारे में सोचो और खुश रहो."

कटार का धणी: अमरसिंह राठौड़

गौरवशाली इतिहास

--लेख--

गिरधर राम
बीकानेर, राजस्थान

राजस्थान की धरती वीरता, स्वाभिमान और बलिदान की गाथाओं से भरी पड़ी है। इस मिट्टी ने अनगिनत रणबांकुरों को जन्म दिया, जिन्होंने अपनी तलवार की धार से इतिहास के पन्नों पर वीरता के सुनहरे अक्षर लिखे। इन्हीं में से एक नाम है—अमरसिंह राठौड़, जिन्हें "कटार का धणी" कहा जाता है। उनका नाम सुनकर दुश्मनों के चेहरे ज़र्द पड़ जाते थे, और उनकी तलवार की झनकार ही काफी थी युद्ध भूमि में खलबली मचाने के लिए। उनका जीवन गौरव, स्वाभिमान और बलिदान की अनुपम गाथा है, जो आज भी राजस्थान के लोकगीतों में गूंजती है।

मारवाड़ की माटी से जन्मे वीर

अमरसिंह राठौड़ का जन्म राजस्थान के मारवाड़ में हुआ था। वे जोधपुर के राठौड़ वंश से ताल्लुक रखते थे, जो अपने शौर्य और स्वाभिमान के लिए प्रसिद्ध था। बचपन से ही वे असाधारण पराक्रम और साहस के धनी थे। तलवारबाज़ी, घुड़सवारी और युद्धकला में उन्हें महारथ हासिल थी। उनका व्यक्तित्व तेजस्वी था—लंबा चौड़ा कद, मांसल शरीर, उग्र नेत्र और तेज़ चाल। वे जहां जाते, लोग उनकी बहादुरी और व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाते।

उनकी वीरता की चर्चा दूर-दूर तक फैल चुकी थी। जब उनकी बहादुरी की कहानियां दिल्ली के मुग़ल बादशाह शाहजहाँ तक पहुंचीं, तो बादशाह ने उन्हें अपनी सेना में शामिल कर लिया और उन्हें नागौर का हाकिम नियुक्त किया। इस नियुक्ति से अमरसिंह की शक्ति और प्रभाव में वृद्धि हुई, लेकिन यह शक्ति ही उनके दुश्मनों की जलन का कारण बनी।

शाही दरबार और ईर्ष्यालु सलावत खां

मुग़ल दरबार साजिशों और षड्यंत्रों का अड्डा था। अमरसिंह राठौड़ की बढ़ती प्रतिष्ठा कई दरबारियों को रास नहीं आई। उनमें सबसे प्रमुख था सलावत ख़ाँ, जो बादशाह शाहजहाँ का खासमखास अमीर था। सलावत ख़ाँ को अमरसिंह का स्वाभिमानी स्वभाव पसंद नहीं था। वह चाहता था कि अमरसिंह दरबार में बाकी राजाओं की तरह सिर झुकाकर रहें, मगर राजपूती आन-बान के धनी अमरसिंह किसी के आगे झुकना नहीं जानते थे।

एक दिन दरबार में किसी विशेष अवसर पर सलावत ख़ाँ ने अमरसिंह से 80 हज़ार अशर्फियाँ देने को कहा, जो एक तरह से अपमान का प्रयास था। अमरसिंह ने इसे अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझा और साफ़ इनकार कर दिया। इस पर सलावत ख़ाँ ने क्रोधित होकर दरबार में उनका सार्वजनिक अपमान करने की कोशिश की। मगर यह भूल गया कि एक राजपूत योद्धा अपने आत्मसम्मान के लिए जान दे सकता है, लेकिन अपमान सहन नहीं कर सकता।

सलावत ख़ाँ की बेहूदा बातें सुनकर अमरसिंह का खून खौल उठा। उन्होंने बिना एक पल गँवाए अपनी तीखी कटार निकाली और दरबार के बीचों-बीच सलावत ख़ाँ के सीने में घोंप दी। पूरा दरबार सकते में आ गया। किसी ने सोचा भी नहीं था कि अमरसिंह इतनी तेज़ी से वार करेंगे। सलावत ख़ाँ ने तड़पते हुए दम तोड़ दिया।

मुग़ल बादशाह शाहजहाँ यह देखकर क्रोधित तो हुआ, मगर वह जानता था कि अमरसिंह की वीरता और पराक्रम अतुलनीय है। वह उन्हें सीधे तौर पर दंड नहीं दे सकता था, लेकिन उसने उनकी गिरफ्तारी का आदेश दिया। मगर अमरसिंह कोई मामूली योद्धा नहीं थे—वे वहां से तलवार लहराते हुए मुग़ल सेना को चीरते हुए निकल गए और नागौर किले में शरण ली।

नागौर में स्वाभिमान की आखिरी जंग

अमरसिंह के इस अपमानजनक विद्रोह ने शाहजहाँ की प्रतिष्ठा को चुनौती दे दी थी। बादशाह ने अपने सेनापति काज़ी अली बेग को बड़ी सेना के साथ नागौर भेजा, ताकि अमरसिंह को सबक सिखाया जा सके।

नागौर का किला युद्ध के लिए तैयार था। अमरसिंह ने अपने योद्धाओं को इकट्ठा किया और युद्ध का बिगुल बजा दिया। मुग़ल सेना ने किले को चारों तरफ से घेर लिया, लेकिन राजपूत योद्धाओं के हौसले को तोड़ पाना आसान नहीं था। अमरसिंह ने खुद अपने वीर घोड़े पर चढ़कर युद्ध का नेतृत्व किया और दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए।

कई दिनों तक चली भीषण लड़ाई में अमरसिंह ने अपनी तलवार से मुग़ल सेना को धूल चटा दी। मगर दुर्भाग्य से, जब वे अकेले ही मुग़लों के बीच घिर गए, तो उनके ही एक धोखेबाज़ साथी अर्जुन गुढ़ा ने विश्वासघात कर दिया। यह देख अमरसिंह क्रोधित हुए, मगर तब तक देर हो चुकी थी। मुग़ल सैनिकों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और आखिरकार उन्होंने वीरगति प्राप्त की।

अमरसिंह की विरासत: कटार का धणी

अमरसिंह राठौड़ की वीरता और बलिदान ने राजपूती शौर्य की अमिट छवि को और अधिक उज्ज्वल कर दिया। उनका नाम आज भी राजस्थान के लोकगीतों, किंवदंतियों और वीरगाथाओं में जीवित है। उनकी कहानी यह सिखाती है कि सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा के लिए मर मिटना ही सच्चे योद्धा की पहचान होती है। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि एक वीर सिर्फ़ तलवार की ताक़त से महान नहीं बनता, बल्कि अपने आत्मसम्मान और अदम्य साहस से अमर होता है।

राजस्थान में जब भी वीरता की मिसाल दी जाती है, तो "कटार का धणी" अमरसिंह राठौड़ का नाम सबसे पहले लिया जाता है। उनकी गाथा हर उस शख्स को प्रेरित करती है, जो अन्याय के विरुद्ध खड़ा होना चाहता है और अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ना चाहता है। उनका बलिदान यह संदेश देता है कि "सिर कट सकता है, मगर झुक नहीं सकता।"

उपनाम "कटार का धणी" क्यों पड़ा?

- उनकी कटार दुश्मनों के लिए काल समान थी, जिससे उन्होंने दरबार में ही सलावत ख़ाँ का वध कर दिया।
- उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी कटार और तलवार के सहारे स्वाभिमान की रक्षा की।
- उनकी वीरता इतनी अप्रतिम थी कि उनका नाम कटार की धार की तरह अमर हो गया।

आज भी जब कोई अपने आत्मसम्मान के लिए लड़ने की बात करता है, तो अमरसिंह राठौड़ की कहानी हौसला देती है। उनका जीवन हर राजपूत योद्धा और स्वाभिमान से जीने वाले व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका बलिदान हमें यह सिखाता है कि "जिंदगी में इज़्ज़त सबसे ऊपर होती है, और जब बात इज़्ज़त की हो, तो तलवार उठाने से कभी न हिचकिचाना।"

कविता

हमें गर्व है इस मरुधरा पर

--रचनाकार--

चूना राम चौधरी
(अध्यापक)
बाड़मेर, राजस्थान

हमें गर्व है इस मरुधरा पर.
महाराणा की शौर्य धरा पर,

मरुप्रदेश के धोरों पर,
अरावली की ऊँची चोटियों पर,
चम्बल की बहती धारों पर,
किले और परकोटों पर,
हमें गर्व है इस मरुधरा पर.

घूमर की थिरकन पर,
कालबेलिया के गान पर,
पधारो म्हारे देश की ताल पर,
रावणहत्था की तान पर,
हमें गर्व है इस मरुधरा पर.

बंधेज रंगी ओढ़नी पर,
गहनों से सजी नार पर,
झुकते नहीं किसी डर पर,
मूंछें ताने पगड़ी पहने मर्दों पर,
हमें गर्व है इस मरुधरा पर.

कैर सांगरी गट्टे से सजे थाल पर,
दाल बाटी चूरमे के एहसास पर,
रस में घुले मीठे घेवर पर,
सोगरे के स्वाद पर,
हमें गर्व है इस मरुधरा पर.

जयपुर की सैर: राजसी वैभव और रंगीन संस्कृति का अनोखा संगम

पधारो म्हारे देश

राजस्थान की राजधानी जयपुर, जिसे "गुलाबी नगर" के नाम से भी जाना जाता है, भारत के सबसे खूबसूरत और ऐतिहासिक शहरों में से एक है। अरावली पर्वतमाला की गोद में बसे इस शहर की स्थापना 1727 में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने की थी। अपने राजसी महलों, भव्य किलों, पारंपरिक बाजारों और रंगीन संस्कृति के लिए यह शहर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। जयपुर की सैर न केवल इतिहास और वास्तुकला के प्रशंसकों के लिए एक सुखद अनुभव है, बल्कि यह हर यात्री के दिल में अपनी गहरी छाप छोड़ने की क्षमता रखता है।

--लेख--

ठाकराराम जाखड़
बाड़मेर, राजस्थान

जयपुर की विशेषताएं

जयपुर अपनी गुलाबी इमारतों के कारण विशेष रूप से पहचाना जाता है। यह गुलाबी रंग 1876 में प्रिंस ऑफ वेल्स के स्वागत के लिए शहर को रंगने के दौरान अपनाया गया था और आज भी इसकी पहचान बना हुआ है। जयपुर भारत का पहला सुनियोजित शहर है, जिसे वास्तुकला के शिल्प में दक्ष बंगाली वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य ने तैयार किया था।

जयपुर के प्रमुख पर्यटन स्थल

1. आमेर किला

जयपुर से लगभग 11 किलोमीटर दूर स्थित आमेर किला अपनी भव्यता और सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह किला राजा मानसिंह प्रथम द्वारा बनवाया गया था और इसमें राजस्थानी और मुगल वास्तुकला का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। किले के अंदर शीश महल, दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास जैसे प्रमुख हिस्से हैं।

2. सिटी पैलेस

जयपुर के केंद्र में स्थित सिटी पैलेस, शाही परिवार का निवास स्थान रहा है। यह महल वास्तुकला, शिल्पकला और राजस्थानी संस्कृति का प्रतीक है। सिटी पैलेस में चंद्र महल, मुबारक महल, और दीवान-ए-खास जैसे भव्य हिस्से हैं।

3. हवा महल

हवा महल, जिसे "पैलेस ऑफ विंड्स" के नाम से भी जाना जाता है, जयपुर का एक अनोखा और आकर्षक स्मारक है। लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर से बने इस महल का निर्माण 1799 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। महल में 953 छोटी-छोटी जालीनुमा खिड़कियां हैं, जो गर्मियों में ठंडी हवा को अंदर लाती हैं।

4. जल महल

मानसागर झील के बीचों-बीच स्थित जल महल, अपनी अद्भुत संरचना और शांत वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे यह पानी के ऊपर तैर रहा हो। यहां पर सैलानी नौका विहार का आनंद ले सकते हैं।

5. जंतर मंतर

जंतर मंतर, जयपुर का एक वैज्ञानिक धरोहर स्थल है, जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। इसे महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने बनवाया था। यहां पर विभिन्न खगोलीय यंत्रों का संग्रह है, जो उस समय के वैज्ञानिक और खगोलीय ज्ञान को प्रदर्शित करता है।

6. नाहरगढ़ किला

अरावली की पहाड़ियों पर स्थित नाहरगढ़ किला, जयपुर का एक और आकर्षक स्थल है। यह किला शहर का मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है और इसे खासतौर पर सूर्यास्त के समय देखना एक अद्भुत अनुभव होता है।

जयपुर के बाजार

जयपुर के बाजार यहां की जीवंतता और संस्कृति को दर्शाते हैं। यहां के बाजारों में पारंपरिक हस्तशिल्प, आभूषण, रंगीन कपड़े और स्मारिका सामग्री मिलती हैं।

– जौहरी बाजार: यह बाजार आभूषणों के लिए प्रसिद्ध है।

– बापू बाजार: यहां रंग-बिरंगे बंधेज कपड़े, जूतियां और हस्तशिल्प वस्तुएं मिलती हैं।

– चांदपोल बाजार: यहां संगमरमर की मूर्तियां और पारंपरिक सामान मिलते हैं।

जयपुर की सैर करना एक ऐसा अनुभव है, जो आपको इतिहास, संस्कृति और आधुनिकता का अनोखा मिश्रण प्रदान करता है। यहां की शाही वास्तुकला, पारंपरिक रीति-रिवाज, और स्वादिष्ट व्यंजन यात्रियों को हमेशा के लिए मोहित कर लेते हैं।

जयपुर एक ऐसा शहर है, जहां आप राजसी वैभव और रंगीन संस्कृति का अद्भुत संगम देख सकते हैं। यह शहर अपनी ऐतिहासिक धरोहरों, जीवंत बाजारों, और गर्मजोशी से भरे लोगों के कारण हर साल लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है। अगर आपने अभी तक जयपुर की सैर नहीं की है, तो यह आपकी सूची में जरूर शामिल होना चाहिए।

अगर आप अपने शब्दों के मोती “राजताज” की माला में पिरोना चाहते है तो संपर्क करें

“राजताज" हेतु आप भी रचनाएँ भेज सकते है. आलेख, समीक्षा, इतिहास, कला, विज्ञान, रोजगार, धरोहर, साक्षात्कार, शोध परक लेख, यात्रा वृतांत, लोक साहित्य, कविता, गीत, गजल, किस्सा-कहानी, व्यंग्य, संस्मरण, पुस्तक-समीक्षा आदि साहित्य की सभी विधाओं में रचनाओं का स्वागत है.

आपकी रचना मौलिक और अप्रकाशित है. इस बात का उल्लेख किया जाना चाहिए. रचनाएँ अपना नाम, पता, तस्वीर और परिचय सहित admin@rajtaj.com पर ई-मेल भेजें. आपके लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किये जायेंगे.

हम ऐसी रचनाओं की स्वीकार नहीं करते है जो समाज की भावनाओं को ठेस पहुंचाती हों, किसी वर्ग या किसी विशेष समुदाय, किसी राजनीतिक पार्टी के समर्थन या आलोचना से ग्रस्त हो.

सपनें, संघर्ष, सफलता

पिताजी हमेशा कहते है बेटियां बेटों से कम है क्या

-पायलट गरिमा चौधरी

--लेख--

पोकरा राम
(अध्यापक)
बालोतरा, राजस्थान

बाड़मेर की रेतीली सरज़मीं से उठकर आसमान की बुलंदियों तक पहुंचने वाली गरिमा चौधरी की कहानी किसी अफसाने से कम नहीं। यह वही धरती है जहाँ के वीरों ने इतिहास रचा है और अब गरिमा ने अपनी मेहनत, जज़्बे और हौसले से एक नया मुकाम हासिल किया है। उनके संघर्ष, लगन और परिश्रम की यह कहानी हर उस लड़की के लिए एक मिसाल है जो खुद को सीमित दायरों से बाहर निकाल कर नई बुलंदियों को छूना चाहती है। गरिमा चौधरी की ज़िंदगी हमें यह सिखाती है कि अगर इरादे मजबूत हों, मेहनत और लगन हो तो कोई भी बाधा आपकी मंज़िल तक पहुंचने से रोक नहीं सकती। उनका यह सफर संघर्ष, मेहनत, और कामयाबी की अनूठी मिसाल है। इस लेख में हम गरिमा की ज़िंदगी, उनके संघर्ष, एविएशन की दुनिया में उनके सफर और उनकी प्रेरणादायक यात्रा को विस्तार से जानेंगे।

परिचय और प्रारंभिक जीवन

बाड़मेर के किसान परिवार की बेटी गरिमा चौधरी का जन्म बाबा रामदेव की जन्म स्थली काश्मीर(शिव) में हुआ। इन्होनें विद्यालयी शिक्षा टी.टी.पब्लिक स्कूल, बाड़मेर और केंद्रीय विद्यालय, जालिपा, बाड़मेर से प्राप्त की। पिता श्री खींयाराम सारण बाड़मेर में मेडिकल स्टोर का संचालन करते है तथा माता श्रीमती कमला चौधरी गृहणी है, जो शिव से पूर्व प्रधान (2000-2005) भी रह चुकी है। इनके परिवार में तीन बहिने है। बड़ी बहिन गीता डॉक्टर है तथा छोटी बहिन लक्षिता विद्यालयी शिक्षा में अध्ययनरत है। इनकी परवरिश सादगीपूर्ण हुई, लेकिन इनके सपनों की उड़ान हमेशा बुलंद रही।

कहते है बेटियां बेटों से कम नहीं होती है, इस बात को सच साबित किया है काश्मीर निवासी श्री खींयाराम सारण ने, जिहोनें कभी भी अपनी बेटी के सपनों को छोटा नहीं समझा, बल्कि हमेशा उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। हालांकि, यह रास्ता आसान नहीं था। एक मध्यमवर्गीय परिवार में रहते हुए एविएशन जैसे महंगे कोर्स के लिए पढ़ाई करना आसान नहीं था, लेकिन गरिमा के माता-पिता ने हर संभव कोशिश की कि उनकी बेटी को बेहतरीन शिक्षा मिले।

सपना बना जुनून

गरिमा चौधरी का कहना है कि विद्यालयी शिक्षा के दौरान जब आसमान में हवाई जहाज को उड़ते देखती तो उनके मन में यह ख्याल आता कि काश, एक दिन वे भी उसी जहाज को चला पाएं। यही सपना आगे चलकर उनका जुनून बना।

चुनौतियों से संघर्ष

पायलट बनना किसी भी आम छात्र के लिए आसान नहीं होता, खासकर तब जब आप एक छोटे से गांव से आते हैं और आपके पास सीमित संसाधन होते हैं। गरिमा चौधरी के सामने कई मुश्किलें थीं –

- आर्थिक समस्याएं – एविएशन ट्रेनिंग बेहद महंगी होती है। पायलट बनने के लिए लाखों रुपये फीस में खर्च करने पड़ते हैं। ऐसे में किसान परिवार से होने के कारण उनके लिए यह एक बड़ी चुनौती थी।
- सामाजिक बाधाएं – एक छोटे से गांव में लड़कियों को पारंपरिक करियर विकल्पों तक सीमित रखा जाता है। ऐसे में, गरिमा के लिए पायलट बनने का सपना समाज के कुछ लोगों को अजीब लगा।
- संसाधनों की कमी – बाड़मेर जैसे शहर में उच्चस्तरीय शिक्षा और एविएशन से संबंधित सुविधाएं बहुत कम थीं, जिससे गरिमा को आगे की पढ़ाई के लिए बड़े शहरों का रुख करना पड़ा।

लेकिन गरिमा ने इन सब बाधाओं को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उन्होंने कड़ी मेहनत की, पढ़ाई में बेहतरीन प्रदर्शन किया और आखिरकार अपने सपने की ओर कदम बढ़ाया।

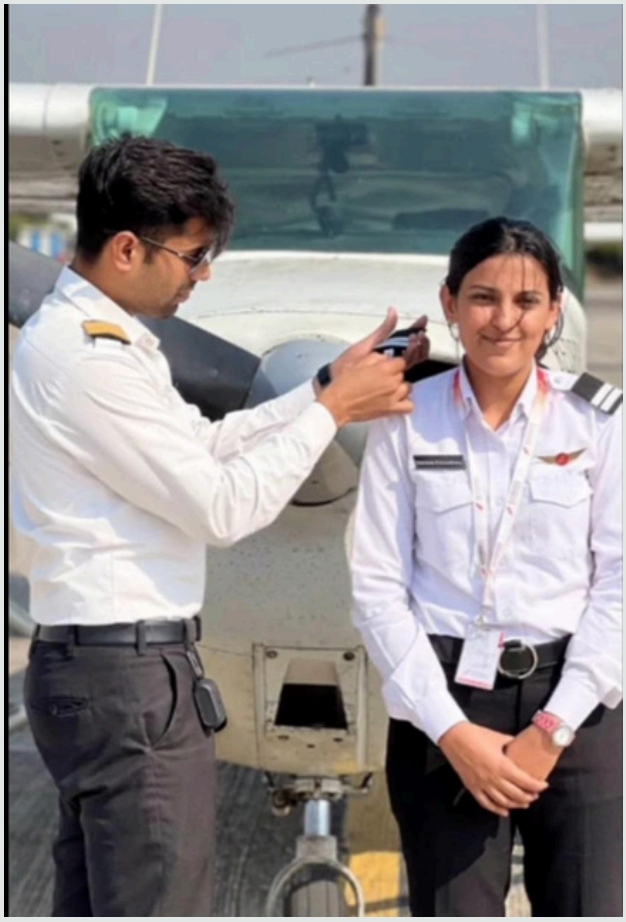

एविएशन की दुनिया में प्रवेश

गरिमा चौधरी ने एविएशन इंडस्ट्री में कदम रखने के लिए कड़ी मेहनत की। सन 2019 में पायलट ट्रेनिंग के लिए गई, लेकिन कुछ ही दिनों में कॉविड आ गया और ट्रेनिंग अकादमी दो साल तक बंद रही। इसके बाद 2021 में पुणे की रेड बर्ड फ्लाइंग अकादमी से ट्रेनिंग पूरी की तथा एयरबेस-320 का प्रशिक्षण कोलंबिया में पूरा किया। यह सफर बेहद कठिन था क्योंकि एविएशन से जुड़े कोर्स में न केवल पढ़ाई कठिन होती है, बल्कि इसमें शारीरिक और मानसिक रूप से भी काफी मेहनत करनी पड़ती है।

उनकी ट्रेनिंग के दौरान उन्होंने विभिन्न प्रकार के विमान उड़ाने का अनुभव हासिल किया और एविएशन इंडस्ट्री में अपना नाम बनाने के लिए जी-तोड़ मेहनत की। आखिरकार, उनकी मेहनत रंग लाई और उन्हें देश की प्रतिष्ठित इंडिगो एयरलाइंस में जूनियर फर्स्ट ऑफिसर (पायलट) के रूप में चयनित कर लिया गया। यह क्षण न केवल उनके लिए बल्कि पूरे बाड़मेर जिले के लिए गर्व का विषय बन गया।

“मुझे बहुत ख़ुशी है कि मेरी बेटी अब हवाई जहाज उड़ाएगी। गरिमा खुद शुरू से बहुत सक्रिय और मेहनती रही। एग्जाम यो या ट्रेनिंग वह हर समय मजबूत रहकर इस लक्ष्य तक पहुँची है।”

-पिता श्री खींयाराम सारण

समाज के लिए प्रेरणा

गरिमा चौधरी की इस उपलब्धि ने न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे राजस्थान और देश के लिए गर्व का अवसर प्रदान किया। उनकी सफलता ने कई अन्य लड़कियों को भी प्रेरित किया है कि वे अपने सपनों को सच करने के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। आज वे युवाओं, विशेषकर लड़कियों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गई हैं। उनके संघर्ष और मेहनत की कहानी उन सभी को यह संदेश देती है कि संसाधनों की कमी आपको सफलता से नहीं रोक सकती, अगर आपके पास मेहनत और लगन है।

वे अब चाहती हैं कि बाड़मेर और राजस्थान के अन्य क्षेत्रों की लड़कियां भी एविएशन इंडस्ट्री में आएं। इसके लिए वे कई कार्यक्रमों और सेमिनार्स में हिस्सा लेकर लड़कियों को जागरूक कर रही हैं।

गरिमा चौधरी का मानना है कि –
"छोटे गांव की बेटियां भी बड़े सपने देख सकती हैं और उन्हें पूरा कर सकती हैं। अगर आप अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हैं, तो कोई भी बाधा आपको रोक नहीं सकती। सपने देखने से ज्यादा ज़रूरी उन्हें पूरा करने के लिए मेहनत करना है। अगर आप मेहनत करेंगे, तो सफलता आपके कदम चूमेगी।"

चित्र पहेली

इस चित्र पर अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए कुछ लिख भेजें-
कविता, लघुकथा या कैप्शन.

सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि को पुरस्कृत किया जाएगा. प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 20 मार्च, 2025 है. प्रविष्टि admin@rajtaj.com पर ईमेल भेजें या +919001363510 पर whatsapp सन्देश भेजें.

कविता

त्यौहार होली को आयो रे

फागण आयो, रंग बरसायो,
गांव-गांव में हर्ष छायो।
गुलाल उड़्या गगन में रंग,
मौज मस्ती संग ही संग।

पिचकारी की धार चली,
भीग गई सारी गली।
बच्चा, बूढ़ा, नर-नारी,
सब पर भारी रंग पिचकारी।

केसर, अबीर और चंदन की बौछार,
रंग में रंग्या है संसार।
मालपुआ अर गुजिया आई,
मीठी-मीठी खुशबू छाई।

ढोल मंजीरा बाजे रे,
घूमर थिरकण लागे रे।
भंग की ठंडाई संग में भाई,
रंग जमी रे होली आई।

बुरा न मानो, बांटो प्यार,
होली है उत्सव अपार।
मिल जुल सब मनाओ रे,
त्यौहार होली को आयो रे।

--रचनाकार--

गोविन्द सुवालका
(अध्यापक)
भीलवाडा, राजस्थान

लोक रंग

अलगोजा: राजस्थान की रेत में बसी सुरों की सरगम

--लेख--

बाबूलाल गोदारा
बाड़मेर, राजस्थान

राजस्थान की मिट्टी में कण-कण संगीत से सराबोर है। यहाँ का हर किला, हर गली और हर रेगिस्तानी टीला अपनी ही एक अनसुनी धुन बुनता है। इसी सुरमयी धरती का एक बेजोड़ लोक वाद्य है अलगोजा, जिसे जब कोई कुशल कलाकार बजाता है, तो लगता है जैसे रेगिस्तान खुद गुनगुना उठा हो। यह वाद्य यंत्र न केवल संगीत प्रेमियों के लिए एक मधुर अनुभव है, बल्कि राजस्थान की लोकसंस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा भी है।

एक अनूठा लोक वाद्य

अलगोजा बाँस से बनी एक युग्म बांसुरी है, जिसे बजाने वाले कलाकार एक साथ मुँह से फूँकते हैं। इसका एक छोर मेलोडी (मुख्य धुन) निकालता है, तो दूसरा सुर की स्थिरता बनाए रखता है। यह वाद्य मुख्य रूप से राजस्थान, पंजाब, सिंध और गुजरात के लोक संगीत में अपनी अलग पहचान रखता है। राजस्थान में अलगोजा का उपयोग विशेष रूप से लोकनृत्य, गायन, और रेगिस्तानी संगीत में किया जाता है। यह वाद्य अपने स्वर में एक रहस्यमय मिठास और गहराई समेटे हुए है, जो सुनने वाले को एक अलग ही दुनिया में ले जाती है।

अलगोजा की धुनों में रेत की कहानी

अलगोजा की धुनों में राजस्थान के लोकजीवन की कहानियाँ छिपी होती हैं। जब किसी वीरान रेगिस्तान में ऊँटों का काफिला गुजरता है, जब कोई विरहन अपने प्रियतम के लौटने की राह देखती है, या जब कोई गड़ेरिया अपनी भेड़ों के संग निर्जन पहाड़ियों में सफर करता है – इन सभी भावनाओं को अलगोजा की मधुर तानें व्यक्त कर देती हैं।

लोकगीतों में अलगोजा:

1. "केसरिया बालम आवो नी..." – जब यह गीत अलगोजा के सुरों में घुलता है, तो लगता है जैसे राजस्थान की मिट्टी खुद पुकार रही हो।
2. "घिर घिर आवे बदरिया..." – इस गीत में अलगोजा की मीठी तानें मानसून की प्रतीक्षा को व्यक्त करती हैं।
3. "चूड़ी मंगाई ले सा..." – इस लोकगीत में अलगोजा के स्वर प्रेम और उमंग को जीवंत कर देते हैं।

अलगोजा की अनूठी विशेषताएँ

- इसे बजाने के लिए श्वास-नियंत्रण का जबरदस्त अभ्यास जरूरी होता है।
- यह शुद्ध प्राकृतिक ध्वनि उत्पन्न करता है, जो किसी भी कृत्रिम ध्वनि से अधिक मधुर होती है।
- राजस्थान की लोकसंस्कृति में यह प्रेम, बिछोह और प्रकृति के भावों को व्यक्त करने का माध्यम है।

राजस्थान के प्रसिद्ध अलगोजा कलाकार

राजस्थान में कई प्रतिभाशाली कलाकार हुए हैं, जिन्होंने अलगोजा की धुनों से न केवल देश, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान बनाई है।

1. रामनाथ चौधरी

रामनाथ चौधरी को अलगोजा के श्रेष्ठतम कलाकारों में गिना जाता है। पद्म पुरस्कार से सम्मानित इस महान कलाकार ने राजस्थान के पारंपरिक संगीत को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनकी अलगोजा की धुनों में राजस्थान की आत्मा गूंजती थी।

2. घोघे खां (बाड़मेर)

घोघे खां का नाम अलगोजा वादन में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है। वे 1982 के एशियाई खेलों में अलगोजा बजाकर भारत का नाम रोशन कर चुके हैं। इतना ही नहीं, जब भारत के पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी एवं

सोनिया गांधी के विवाह का आयोजन हुआ, तब घोघे खां ने अलगोजा की मधुर तानें छेड़ी थीं।

3. उस्ताद खमीसु खान

उस्ताद खमीसु खान को अलगोजा के जादूगर के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपनी साधना और कला से इस वाद्य को अभूतपूर्व ऊँचाइयाँ दीं। उनकी धुनों में सूफी संगीत का रंग झलकता है और श्रोताओं को एक आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।

4. उस्ताद मिश्री खान जमाली

उस्ताद मिश्री खान जमाली का नाम अलगोजा के महानतम कलाकारों में गिना जाता है। उनका संगीत राजस्थान की मिट्टी की महक लिए होता था। उन्होंने अलगोजा के साथ कई तरह के प्रयोग किए, जिससे इस वाद्य को नई पहचान मिली।

5. हसन खान लंगा (जैसलमेर)

राजस्थान के जैसलमेर जिले से ताल्लुक रखने वाले हसन खान लंगा को अलगोजा के श्रेष्ठ कलाकारों में गिना जाता है। लंगा समुदाय से आने वाले हसन खान ने अलगोजा को पारंपरिक शैली में ही नहीं, बल्कि आधुनिक मंचों पर भी प्रस्तुत किया है। उनकी धुनों में राजस्थान के थार की रूह बसती है।

6. रोशन खान (बाड़मेर)

बाड़मेर के इस प्रतिभाशाली कलाकार ने अलगोजा को एक नई ऊँचाई दी है। उनकी प्रस्तुतियाँ कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हुई हैं। उन्होंने अलगोजा के सुरों को कई आधुनिक फ्यूज़न प्रयोगों से जोड़ा, जिससे यह वाद्य नई पीढ़ी को भी आकर्षित करने लगा।

7. अनवर खान मांगणियार (जैसलमेर)

मांगणियार समुदाय राजस्थान के सबसे प्राचीन संगीत परंपराओं को जीवंत रखने के लिए प्रसिद्ध है। अनवर खान मांगणियार इस परंपरा को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख कलाकारों में से एक हैं। उनकी अलगोजा की धुनें मांड और पनिहारी जैसे लोकगीतों के साथ सम्मिलित होकर जादू बिखेरती हैं।

8. गुलाब खान लंगा (पोकरण)

गुलाब खान लंगा का नाम भी अलगोजा के सबसे बड़े कलाकारों में शुमार किया जाता है। उनका संगीत ठेठ लोक शैली में है, जिसमें राजस्थान के पारंपरिक सुरों की महक बसती है। उनकी अलगोजा की धुनें सुनने वालों को रेगिस्तान की शांति और उसकी कठोरता दोनों का अहसास कराती हैं।

संरक्षण और भविष्य

आज के इलेक्ट्रॉनिक संगीत युग में पारंपरिक वाद्ययंत्रों को सहेजना एक चुनौती बनता जा रहा है। हालांकि, कुछ लोककलाकार और संगीत संस्थाएँ इसे जीवित रखने के लिए प्रयासरत हैं। अगर युवा पीढ़ी इसे अपनाए, तो यह लोक धरोहर आने वाले समय में भी अपनी मधुरता बनाए रखेगी। अलगोजा केवल एक वाद्य यंत्र नहीं, बल्कि राजस्थान की रूह की आवाज़ है। इसकी धुन में वह मिठास है, जो रेगिस्तान के सूखेपन को भी संगीतमय कर देती है। जब भी अलगोजा की धुन गूंजती है, तो लगता है जैसे थार की हवाओं में किसी पुराने प्रेमी की यादें बिखर गई हों। यही तो है राजस्थान का लोकसंगीत – शाश्वत, अनमोल और आत्मा को छू लेने वाला।

।। श्री गणेशाय नमः ।। शिक्षा

।। जय माँ शारदे ।। संस्कार

।। जय मूलाराम जी महाराज ।। अनुशासन

श्री बालाजी हॉस्टल & ट्यूशन क्लासेज

प्रवेश प्रारम्भ

(Boys) सिणधरी (बालोतरा)

कक्षा 3 से 12 वीं तक

सीमित सीटे

छात्रावास में * उपलब्ध भौतिक सुविधाऐं *

- घर से दूर, घर जैसा वातावरण, हवादार भवन
- महीने में दो बार स्पेशल डाइंट
- कपड़े धोने के लिए वॉशिंग मशीन की व्यवस्था
- स्वादिष्ट एवं शुद्ध नास्ते एवं भोजन की व्यवस्था
- अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा कक्षा 3 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क ट्यूशन की व्यवस्था
- बच्चों के मनोरजन हेतु खेल मैदान की व्यवस्था
- सत्र में एक बार शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्था
- पीने हेतु शुद्ध मीठे पेयजल की व्यवस्था
- प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देकर प्रतिभा विकास हेतु सतत् प्रयास
- सोने के लिए पृथक पृथक बैड की व्यवस्था
- अभिभावक के इच्छानुसार सिणधरी के प्रतिष्ठित विद्यालय में प्रवेश की व्यवस्था (सरस्वती, रामदेव, K.K. स्टार, कृष्णा पब्लिक)

नवोदय विद्यालय सम्पूर्ण तैयारी हेतू प्रवेश प्रारम्भ

*ENGLISH*SCIENCE*MATHEMATICS*SST

नोटः- अपने बच्चे को किसी अन्य छात्रावास में प्रवेश दिलाने से पूर्व एक बार हमारे छात्रावास का अवलोकन जरुर करें ।

निदेशक
पोकर राम सारण, होडू
(अध्यापक)

सम्पर्क सूत्र :- 9610412154, 6377847231

व्यवस्थापक
सत्यप्रकाश सारण
(होडू)

पताः- बाईपास रोड़, किसान कॉलोनी, सिणधरी

श्री देव प्रिन्टिग प्रेस सिणधरी 8107014641

आप सभी का हार्दिक आभार